योग्यता

दो - द्रव्यानुयोग एवं चरणानुयोग का संतुलन हो तो चारों अनुयोग निर्दोष हो जाते हैं | मन-वचन-काय, क्षयोपशम प्रमाण कार्य या प्रयत्न करके संतुष्ट हो जाता है, परन्तु योग्यता के ज्ञान – परिणमन बिना तृप्ति, शांति नहीं मिलती है |

तत्समय की योग्यता

कथन ०.०१% सामर्थ १००%जैन सि.को-२/पृ-१२०

अर्थ - योग्यता = कार्य की शक्ति, सामर्थ्य |

अपरनाम – शक्ति, भवितव्यता |

विशेषता - समर्थ उपादान कारण |

तत समय की योग्यता को दर्शाता - सन्दर्भ –

१- *व्युत्पत्ति अर्थ – जो होने योग्य है उसे भवितव्य कहते है, उसका भाव भवितव्यता कहलाती है |*

२- *योग्यता प्रतिनियामक कारण है |- परीक्षा मुख / न्याय दीपिका*

३- *पर्यार्थिकनय से द्रव्य में जो वर्तमान पर्याय होती है वह उसी रूप से परिणमन की योग्यता रखती है |--धवला १९९*

४- *तत्वतः प्रत्येक द्रव्य में अपनी योग्यतानुसार ही परिणमन होता है |- पंचाध्यायी श्लोक ६९-७०*

५- *वस्तु की एक रूप स्थिति नहीं रहती क्योंकि वह पर्याय का स्वभाव है | समयसार कलश १६३ फूलचंद जी शास्त्री जी की टीका |*

६- *यह जीव इतने काल बीतने पर मोक्ष जाएगा, ऐसी नोंध केवलज्ञान में है – समयसार कलशटीका ४ का भाव |*

७- *अष्ट सहस्त्री ५८ वे श्लोक की टीका – परिणाम क्षणिक उपादान है और गुण शास्वत उपादान है |*

८- *न्याय विनिश्चय – विवक्षित उत्तर कार्य का सजातीय कारण ही उपादान है |*

९- *द्रव्य गुण शुद्ध फिर पर्याय अशुद्ध क्यों ?*

उत्तर – क्षणिक सत् भी अहेतुक होता है | 'स्वस्य भवनं स्वभावः' – धवला ६ भाग पृ १६४

१०- *ऋजु सूत्र नय का विषय – इस नय की दृष्टी से पर्याय का कोई कारण नहीं (अकारण) है | न ही इसका आधार और न ही सहचारी न उसका कोई भूत और न ही भविष्य उसका कोई कर्ता – कर्म-करण-सम्प्रदान-अपादान – अधिकरण भी नहीं होता |- जय धवला पुस्तक १ पृ २०६-७*

११- एक ही कषाय परिणाम के निमित्त से होने वाली भिन्न -२ प्रकृतियो का स्थिति बंध एक समान न होकर, अलग-२ क्यों होता है ? इसका स्पष्टीकरण करते हुए आचार्य वीरसेन स्वामी कहते हैं कि 'प्रकृतियो का अपना अन्तरंग कारण ही वास्तविक कारण है |'

१२- १० वे गुणस्थान में आयु का बंध नहीं होता; इसी प्रकार लोभ के अंतिम अंश मोहनीय के बंध का कारण नहीं होते; अतः मोहनीय कर्म प्रकृति का बंध भी नहीं होता | वहां ज्ञाना.की ५, दर्शना. को ४, अन्तराय की ५, साता वेदनीय की १, नाम कर्म की १ तथा गौत्र कर्म की १ इस प्रकार १७ कर्म प्रकृतियो का बंध पड़ता है | अब इन सभी प्रकृतियो में निमित्त कारण तो अबुद्धि पूर्वक लोभ के परिणाम एक ही है | लोभ का अंश सबको निमित्त रूप एक ही होने पर भी, कर्म प्रकृतियो के स्थिति बंध में अंतर पड़ता है | ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय की स्थिति अंतर्मुहूर्त की बंधती है साता वेदनीय की १२ अंतर्मुहूर्त यश कीर्ति नाम कर्म उच्च गौत्र कर्म की की ८-८ अंतर्मुहूर्त की बंधती है इस प्रकार स्थिति बंध भिन्न-२ पड़ता है |- २८-८-१९५४ बाक्य रात्री गुरुदेव श्री की चर्चा से, सद्गुरु प्रवचन प्रसाद से साभार |- स्वाधीनता का शंखनाद मंगलायतन से प्रकाशित |

१३- स.सा.गाथा १३ की टीका- विकार्य एवं विकारक दोनों पाप एवं दोनों पुण्य हैं | इसमें एक जीव पाप पुण्य एवं एक अजीव पाप पुण्य है |

१४- जिज्ञासा शांत | असंयम का मूल जिज्ञासा है | ज्ञप्ति परिवर्तन प्रव.सार गाथा २३२

१५- अकारणकार्यत्व की सिद्धि |

१६- समयसार गाथा – ६८ एवं १३० तथा प्रव. सार गाथा ९५ - एक समय में पाँचों समवाय उपस्थित रहते हैं |

१७- उपशम श्रेणी में ही निकाचित विशिष्ट प्रकृति का बंध होता हैं |

१८- समकिती को अशुभ भाव के समय आयु बंध नहीं होता है |

१९- पुण्यवान तीव्र मिथ्यादृष्टि को ही निकाचित पाप का बंध होता है | ७ वे नरक का बंध वज्र वृषभ नाराच संहनन होना चाहिए |

२०- नरक गति से आने वाले एवं नरक गामी के अमुक अमुक भाव ही होते हैं |

३ रे नरक से आया जीव तीर्थंकर हो सकता है |

४ थे नरक से आया जीव केवली हो सकता है |

५ वे नरक से आया जीव मुनि हो सकता है |

६ ठे नरक से आया जीव श्रावक हो सकता है |

७ वे नरक से आया जीव तिर्यंच समकिती हो सकता है |

२१- निगोदिया जीव सीधे मनुष्य बनकर मोक्ष जा सकता है |

२२- अग्नि एवं वायु कायिक जीव मरकर तिर्यंच ही हो सकता है |

२३- दुसरे स्वर्ग तक के देव ही मात्र एकेंद्रिय में उत्पन्न हो सकते है |(विशेष पढ़िए-गति आगति लेखक प.किशन चंद अलवर)

२४- असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मात्र प्रथम नरक पृथ्वी में ही उत्पन्न होते हैं, उससे आगे नहीं, क्योंकि उनके मन नहीं होता हैं |

२५- दुसरे गुणस्थान में मरण हो सकता है परन्तु स्वर्ग ही जाएगा क्योंकि औपशमिक समकिती है | परन्तु ३ गुणस्थान में मरण कभी नहीं होता है | मार्नान्तिक समुद्धात एवं आयु का बंध भी नहीं होता है | मिथ्यात्व दशा में आयु बंध हो तो पहले गुणस्थान में एवं समकित दशा में आयु बंधे तो ४ थे गुणस्थान में जाकर मरण होगा |

२६- सम्यक मिथ्यात्व एवं सम्यक प्रकृति का बन्ध नहीं होता है परन्तु उदय होता है बंध तो मिथ्यात्व का ही होता है |

२७- दूसरा गुणस्थान वाला नियम से पहले गुणस्थान में ही गिरता है |

२८- ३ रा गुण वाला १ या ४ में वापिस भी जा सकता है |

२९- क्षयोपशम सम्किती ६६ सागर बाद ३ रे में आकर फिर ६६ सागर रुल सकता है |

३०- १ से ४,५,७ में जाने वाले जीव की बिशुद्धि योग्यता में असंख्यात गुना अंतर होता है |

३१- सवा सात वर्ष की आयु में मनुष्य को सम्यक दर्शन अर्थात गर्भ सहित ८ वर्ष में समकित होने की योग्यता | पशुओं में ३, अंतर्मुहूर्त में नारकी एवं देव |

३२- तीर्थंकर प्रकृति वाले जीव सीधे ४थे गुणस्थान से १ ले गुणस्थान में जाते हैं २,३ में नहीं |

३३- वीतरागता अनंत गुनी बढती है परन्तु पूर्वबद्ध कर्म असंख्यात गुने निर्जरा को प्राप्त होते हैं |

३४- ४ से ७ वे गुण में कभी भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध प्रारम्भ होता है परन्तु ८ वे गुण के ६ ठे समय के बाद नहीं बंधता है | ध्रुव बंधी प्रकृति है |

३५- देह की प्रवृत्ति का असर आत्मा की शुद्धता पर नहीं होता है अन्यथा ११ वे गुणस्थान से गिरना नहीं होता |

३६- क्षयोपशम मात्र ४ घातिया कर्मों में होता है |

३७- अप्रशस्त उपशम – अनन्तानुबन्धी को छोड़कर इसका अन्तर करण होता है |

३८- विस्त्रोपचय – मात्र अनन्तानुबन्धी में |

३९- बंध ७ का सदा कदाचित ८ का |

४०- मिथ्यात्व का क्षय कभी नहीं |

४१- क्षायिक भाव मे मरण नहीं |

४२- योग्यता-आसन्न भव्य हो तो ही मतिज्ञान खिलता है | अंतर से जागा जीव उपसर्ग परीषह से भी भयभीत नहीं होता है |

४३- १० वे गुणस्थान में सूक्ष्म लोभ होने पर भी बंध नहीं होता है | यह स्वतन्त्रता है

४४- विकार अनुसार बंध होता भी है और नहीं भी |

कर्म बंध में जीव के भाव(कर्म) निमित्त एवं द्रव्य कर्म नैमेत्तिक भाव है जो पुद्गल रूप उपादान में पाया जाता है | यहाँ कर्म के निमित्त से जीव के भावों में बिशुद्धि नहीं हुई हैं | हाँ द्रव्य कर्म के उदय पर अवश्य निमित्त पने का आरोप होता है उस समय जीव के विकारी भाव नैमेत्तिक कहलाता है |

४५- रामायण में क्रमबद्ध –

हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश विधिहाथ |
सुनहूँ भरत भावी प्रबल बिलख कहें मुनिनाथ ||

४६- स्वछंदता के भय से योग्यता का स्वरूप न जानना परम गुरु में शंका है |

४७- ३ तीर्थंकर चक्रवर्ती दो पद के धारी थे इनकी पटरानी स्वर्ग गई | रावण एवं लक्ष्मण ४थे नरक गए | सीता वहां सम्बोधने नहीं गई |

४८- स्वयंभू रमण समुद्र के महामत्स्य सादि मिथ्यादृष्टि हो तो क्षयोपशम सम्यक्त्व कर सकते हैं प्रथमोपशम नहीं |

४९- योग्यता की प्रतीति होने पर परोक्ष रूप से केवलज्ञान हो गया | "हो गई प्रतीति, न रही मुक्ति में देरी | वश ज्ञाता दृष्टा रहे परिणति मेरी |"-सीमंधर स्तुति –रचयिता बा.ब्र.रवीन्द्र जी 'आत्मन', परमात्म प्रकाश १०० वि गाथा की टीका |

५०- ज्ञान स्वयं की योग्यता से घटता बढ़ता है | स्वयं स्फूर्त ज्ञान सेठ का मेंढक और मेंढक का स्वर्ग |

अन्य बिंदु -

१- पर्याय द्रव्य के लिए पर है; क्योंकि पर्याय – योग्यता में द्रव्य की भी नहीं चलती है | परन्तु द्रव्य की होने से द्रव्य की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती है |

२- योग्यता का ज्ञान न होने से; अन्य दार्शनिकों ने कार्य तो दिखता है, तो उसका कर्ता भी होना चाहिए अतः वह कल्पित करके भगवान को ज्ञानी, इच्छा वाला एवं करने की शक्ति वाला माना |

३- द्रव्यार्थिक नय से द्रव्य में तीनों काल की पर्यायों रूप अपने -२ परिणमन करने की योग्यता है |

४- ज्ञान एवं क्रियाओं से बंध होता रुकता नहीं है, बंध-मोक्ष योग्यता से होता है | ज्ञान एवं क्रिया पर तो आरोप-प्रेरणा की जाती है, बुद्धिपूर्वक प्रयत्न किया जाता है |

५- ज्ञान में जानने की योग्यता एवं पर्याय में होने की योग्यता होती है |

६- द्रव्य गुण में समस्या नहीं है जिस पर्याय में जिस पर्याय से विवाद था वह तो व्यय को प्राप्त हो गई अतः मैत्री हो जाती है | विश्व में आश्चर्य कुछ नहीं है सीता का जीव राम पर तो उपसर्ग करने आया और रावण को सम्यक दर्शन कराने गया | और केवलज्ञान होने पर नम्रीभूत होकर देशना सुनी |

७- विश्व में चमत्कार नामका कोई पदार्थ नहीं है; योग्यता के अज्ञान वश ही अज्ञानी को चमत्कार भासता है |

८- योग्यता वश ; एक ही वस्तु स्थिति अनेकों जीवों को भिन्न-२ प्रतीत होती है |

९- परिणाम किये बिना होता है और लक्ष्य बिना ही जानने में आता है |

१०- परिणाम परिणाम की योग्यता से होता है और ज्ञान ज्ञान की योग्यता प्रमाण जानता है |

११- ५ ज्ञान ५ प्रकार की योग्यता को दर्शाता है | सुखी होने की ताकत-योग्यता होने पर ही क्रम से प्रगट होते है |

१२- ज्ञान एवं ज्ञेयाकार की योग्यता स्वतंत्र है केवली भी ज्ञेयाकार को जान तो सकते हैं, परन्तु बदल नहीं सकते हैं | मैं भी मात्र जान सकता हूँ |

१३- एक ही जल अनेक वृक्षों की योग्यता अनुसार भिन्न -२ स्वाद रूप परिणम जाता है |

१४- करणानुयोगकी चर्चा सूक्ष्म एवं द्रव्यानुयोग की चर्चा स्थूल कहलाती है | परन्तु योग्यता की चर्चा द्रव्यानुयोग की सबसे सूक्ष्म चर्चा है |- मोक्षमार्ग प्रकाशक ८/ पृ

१५- भवितव्य अनुसार ही बंध होता है | तदनुसार ही मन वचन काय की प्रवृत्ति होती है |

१६- सभी योग्यता सभी में नहीं होती है |

१७- जैसी योग्यता वैसा कार्य होता है |

१८- जितनी योग्यता उतना कार्य होता है |

१९- जिसकी योग्यता उसका कार्य होता है |

२०- जब योग्यता तब कार्य होता है |

२१- योग्यता से पूर्व कार्य होता नहीं योग्यता होने पर कार्य रुकता नही |

२२- शब्द/ प्रवृत्ति/ विचार/ संयोग / कर्मोदय / निमित्त से योग्यता नहीं बदलती |

२३- सारी योग्यताएं एक साथ नहीं प्रगटती हैं |

२४- सभी में एकसी योग्यता नहीं होती |

२५- कर्मों का बंध उदय क्षय केवल ज्ञान गम्य है | एक जैसे मन वचन काय की प्रवृत्ति होने पर भी अनेक जीवों को पाप पुण्य प्रथक-२ प्रकार का होता है |

२६- सर्वत्र विस्त्रोपचय रूप कार्माण वर्गणा फैली हैं; वे जीव के परिणाम अनुसार बंधती है |

२७- जगत में कोई भी कार्य चारों अनुयोग सापेक्ष ही होता है | कहने में मुख्यता गौणता है |

२८- योग्यता प्रमाण पाप पुण्य होने से जीव सदा निरपराधी है | आगम भी दोषों की मुख्यता से दोषी कहती है जीव को नहीं |

२९- २ द्रव्य, गुण, पर्याय की योग्यता स्वतंत्र होती है |

३०- दुखी सदा मन वचन काय से जीव को नापता है और ज्ञानी पर्याय की क्षणिक योग्यता से अतः कभी दुखी नहीं होता है |

३१- पर निमित्त बिना कार्य-परिणमन स्वभाव होता है |

३२- ध्रुव के आश्रय से निमित्त का आश्रय मिटता है जिससे निमित्त भी छूटता है |

३३- निमित्त के सानिध्य में योग्यता दिखती है परन्तु निमित्त के कारण नहीं दिखती है |

३४- योग्यता से ही भव्य अभव्य एवं दुरान्दुर भव्य का निर्णय होता है |

३५- अभव्य में सर्वज्ञत्व शक्ति होने पर भी प्रगटने की शक्ति-योग्यता न होने से ही वह अभव्य होता है |

३६- प्रत्येक योग्यता क्षणिक ही होने से दृष्टी के विषय योग्य नहीं |

३७- स्व पर की योग्यता अनिवार – त्रिकाल खचित होने से स्व पर का विकल्प टूट जाता है | अर्थात कर्तृत्व राग द्वेष उत्पन्न नहीं होता है |

३८- योग्यता पारिणामिक भाव है |

३९- राग तत्समय की योग्यता से हुआ स्वभाव माने वह व्यवहाराभासी, पर्याय का दोष भी न माने वह निश्चयाभासी, पर्याय में दोष है फिर भी पर्याय का दोष नहीं है | प्रभुता का भूलना ही दोष है |

४०- निमित्तों की प्रतीक्षा करे बिना, शक्ति को छुपाये बिना, योग्यता प्रमाण उद्यम कर ज्ञायक में तृप्त रहो |

४१- -"तन के द्वारा किये गए पाप से वचन के द्वारा किया गया पाप अधिक होते हैं, मन के द्वारा किया गया पाप अधिक होता है |"

४२- हम स्व-पर की योग्यता बदलने के मात्र ज्ञाता |

४३- योग्यता के बिरुद्ध कथा विकथा है |

४४- योग्यता शक्ति – कार्य के कारण रूप |

४५- नियत योग्यता शक्ति – अनादि अनंत पर्यायों की नियत योग्यतामयी शक्ति |

४६- भिन्न योग्यता शक्ति – भिन्न -२ गुणों की भिन्न योग्यता | श्रद्धा एक साथ पूरी हो, ज्ञान चरित्र क्रम-२ से पूर्ण हो |

४७- अनंत योग्यता शक्ति - अनादि अनंत पर्यायों की अनंत योग्यतामयी शक्ति |

४८- अनंतानंत योग्यता शक्ति - अनादि अनंत पर्यायों की अनंतानंत योग्यता को शक्ति रूप से धरने वाली शक्ति |

४९- औपचारिक सत्य क्या होता है ?

समाधान – पर द्रव्य क्षेत्र काल भाव सापेक्ष कथन यह औपचारिक सत्य कथन कहलाते हैं |